हुकम की पेहेचान

हुकमें देखाया हुकम को, तिन हुकमें देखया हुकम।
भिस्त दोजख उन हुकमे, आखिर सुख सब दम।।
सिंधी प्र० १६ चो० १०

यह चौपाई सिन्धी वाणी की है सिन्धी वाणी में हुकम की पहचान कराई है आखिर हुकम है क्या? पूरी वाणी हुकम से भरी है क्योकि यह सारा खेल हुकम और इलम का है। परमधाम से रूहें तो आई नहीं जहां परमधाम में वन का एक पत्ता भी नहीं गिरता न ही पंक्षी का पर गिरता है। वह अखंड भूमि बेशुमार है वहां की रूहें किसी तरह से बाहर नहीं जा सकती उनकी सुरता हुकम से हैं। हुकम ही खेल दिखा रहा हैं। रूहें तो परमधाम में राज जी के चरणों तले बैठी हैं। वहीं पर खिलवत वाहेदत व इश्क है। राज जी रूहों से कह रहे है रूहों तुम मेरे तन हो। फिर हुकम क्या है? वह अपने तनों पर तो हुकम कर ही नहीं सकते। परमधाम में तो हुकम है ही नहीं। हुकम का अर्थ है आदेश। वहां पर कौन किसे आदेश देगा। इसलिए इस खेल को हांसी का खेल कहा है। हंसी उसे कहते हैं कुछ हो नहीं लगें कि सब कुछ है। राज जी ने रूहों को चरणों के तले बिठा रखा है और खेल में भी भेजा है परआत्म के अन्दर अर्श किया हुआ है उसी परआत्म को फरामोशी देकर दिल में खेल दिखा रहे है। खेल में हुकम और इलम ने हमारी ऐसी हकीकत बना रखी है जिसकी हंसी परमधाम में होगी।

महामत कहे ए मोमिनों, हके हाँसी करी मोमिन।
देख खावंद या खेल को, ए कुंजी तेरा दिल मोमिन।।
सि० प्र० १५/२३

महामत कहे ए मोमिनों हके, बैठाए तले कदम।
करसी हांसी बीच अर्स के, जो करी हुकमें इलम।।
सि० न्धी १६/२०

सिंधी वाणी में हुकम की पेहेचान कराके रूहों को निसबत की पेहचान कराई है जो कि उन्हें परमधाम में नहीं थी वहां पर स्वलीला अद्वैत होने पर भी रूहों ने अपने आपको अलग समझा क्योंकि लीला तो अलग तनों से होती है। तभी तो रूहो ने कहा-इश्क हमारा बड़ा है। हम आपको रिझाती है हम आपके आसिक है पाँचवी भोम में राज जी को शयन कराके अपने अपने मन्दिरो में वापिस जाती है वों सोचती है राज जी तो श्यामा जी के पास रह गए।

अब देखना यह कि हुक्म क्या है? हुकमे देखाया हुक्म को, तिन हुक्में देख्या हुकम। इससे एक देखने वाला है एक दिखाने वाला है। दिखाने वाला जाग्रत है और देखने वाला फरामोशी में है। परमधाम में वाहेदत है एक रस है रूहे जो उनके अपने तन है उन पर तो हुक्म कर नहीं सकते। मूलस्वरूप उस वाहेदत में जो भी इच्छा दिल मे ले लेते है उसी इच्छा को इस द्वैत के ब्रह्माड़ मे हुक्म कहते है। राजजी की इच्छा से परआत्म की नजर अक्षरातीत के दिल से यहाँ के जिन जीवों पर पड़ी उसे भी हुक्म कहा है। वह अक्षरब्रझ जो उनके सत्ता का स्वरूप है जो प्रतिदिन दीदार करके वापिस अक्षरधाम लौट जाता है। जिसके हुक्म से करोड़ो ब्रह्माण्ड पलक झपकने पर बनते और मिट जाते है। वह अक्षरब्रह्म अपने मन के स्वरूप अत्याकृत और चित सबलिक ब्रह्म द्वारा ब्रह्माड बनाता और मिटाता है वह भी उनके हुक्म का स्वरूप है। उन्ही के बनाये जीवो पर सुरतायें खेल देख रही है। यहाँ पर जो भी कुछ हो रहाँ है। मूलस्वरूप की इच्छा पर हो रहा है खेल भी आप दिखा रहे है फरामोशी भी आपने दी है आपका हुक्म यहाँ पर है रूहों ने झूठ को देखा ही नही। झूठ रूहो की नजर

Nijanand App

में नही रह सकता।

झूठ न आवे अर्स मे, सांच नजरो न रहे झूठ।
देख्या अंतर मांहे बाहेर, कछु जरा ब हुक्मे छूट।।

वाहेदत से देखे तो हम हक के, हक हमारे अरस परस है जो कुछ हो रहा है आपकी इच्छा से हो रहा है जैसा आप खिला रहे है वैसा हम खेल रहे है परआत्म मे राज जी है इसलिए हम यहाँ पर उस अखण्ड घर की बातें करते हैं वहा के जर्रे-जर्रे का ज्ञान मोमिनो को है।

दूजे तो कछु है नही, ए बोले बेवरा वाहेदत को।
ज्यों खेलावत त्यो खेलत, ना तो क्या जाने बात बका।।

राज जी ने यह इच्छा अपने मन मे क्यो की? राज जी ने सोचा की मैं अपनी रूहो को अपने निजस्वरूप की पेहचान कराऊ जो रूहो को नही है वह आसिक आसिक ही नही जों कुछ छुपा कर रखे। उन्होने सोचा यह मुझसे रोज लाड़ लडाती है नये-नये तरीको से रिझाती है । मै भी इन्हें लाड़ लड़ाऊ उन अपने चार अंगो के सुख जो आज दिन तक नही दिये थे और उन चार अंगो के सुख लेते हुए भी जिनकी लज्जत नही थी जिस कारण से अपने आपको अलग समझती थी। उन अंगो की पहचान के बिना जिस स्वरूप की पहचान और निसबत की पहचान नही हो सकती जब तक अंगना आने का भाव नही आता तब तक यह जीवन ही व्यर्थ है।

दिल के अंगो बिना हक के, इत स्वाद लीजे क्यो कर।
देखे सुने बोले बिना, तो क्या अर्स नाम धरया धनी बिगर।।

सा०

अपने अंगो की पहचान देने के लिये ही राज जी ने मेहर के दरिया को दिल मे लिया। राज जी के दिल के अंग है इश्क, इल्म, जोश हुकम। निसबत की पहचान राज जी की मेहर से हक के इल्म से होती है जब तक राज जी इल्म को हुक्म नही करते रूह अपने आपको जगा नही सकती। श्यामाजी भी अपने आपको नही जगा सकी

जो लो इलम को हुकमें, कहा नही समझाए।
तो लो सो रूह आपको, क्यो कर सके जगाए।।

यहाँ इलम ही हुकम का स्वरूप है यहाँ वाणी से इश्क की लज्जत ले रहे हैं। राज जी महाराज को पता था ये माया कितनी बलवाली है मोमिन भी उलझ जायेंगे जिसने बड़े-बड़े मुनि को नहीं छोड़ा। माया का बल जानकर वाणी को लाये है। ताकि मोमिनों को वाहेदत, खिलवत, निसबत की पेहेचान हो जायें। परमधाम के सुखों को वाणी से हम यहां ले रहे हैं। खेल के सुखों को हम परमधाम में लेंगे। वाणी से जब अपने धनी-घर की अपनी पेहेचान हो जाती है तो विरह आता है विरह से जोश, जोश से इश्क आता है धनी दिल में अर्श करते हैं सभी न्यामतें आ जाती है। हुकम की पेहेचान धामधनी ने अपनी वाणी से संज में संजये कराई है ताकि काँच का प्याला फूट न जाये अर्थात तनों में बैठी रूहें विरह में आकर शरीर न छोड़ दें।

हुकम जो प्याला देवहीं, सो संजमें संजये में पिलाए।
पूरी मस्ती न हुकम देवहीं, जाने जिन काँच सीसा फूट जाए।।

सा०

किरंतन में कह दिया "मांगत हूँ मेरे दूल्हा" मूझे आपका इश्क चाहिए। खिलवत में मांगते को मै खुदी कहा मैं खुदी को निकालने के प्रकरण हैं फिर आगे कहा कि हम जो मांग रहे हैं आपके हुकम से मांग रहे हैं आप ही उपजाते हों आप ही मांगवाते हो।

Nijanand App

न मांग्या न दिल उपज्या, दिल हके उठाया एह।
तो मांग्या खेल जुदागीय का, देने अपना इश्क स्नेह।।

धनी की मैं से यहां की मैं खतम हो जाती है यह बात समझ में आ जाती है कि यहां दूसरा कोई है ही नहीं सारा ब्रह्माण्ड धनी के हुकम से बना है लीला धनी कर रहे हैं शोभा यहां के तनों को मिल रही है इस माया को दूसरा कैसे कहा जा सकता है। जब माया कुछ है नहीं तब दुःख आने पर दुःखों से दुःखी नहीं होते। तब धनी के लिए विरह आता है।

प्रणाम जी
किरण मेहता
दिल्ली

संवेदना संदेश

परमआदरणीय माँ श्रीमति कैलाशरानी फाज़िल्का (पंजाब) श्री निजानन्द आश्रम रतनपुरी एवं धर्मवीर, जागनी रतन, सरकार श्री के प्रति विशेष श्रद्धा के भाव रखते हुये आश्रम के भण्डारों पर पधारती थीं और वात्सल्य भाव से सब को अपना आशीर्वाद देते सब का मन मोह लेती थीं। होली के पावन पर्व और १२००० पारायणों की समाप्ति के अमृत महोत्सव का आनन्द लेने के लिये इस बार उन्होंने अपने पुत्र राजकुमार व बहू रेनू को भी प्रेरित किया पर प्रारब्ध की विडम्बना देखिये कि रात्रि को तैयारी कर के सोये पर सुबह समय पर नींद नहीं खुली और ट्रेन छूट गई सो दूसरी प्रातः को तीनों ट्रेन से चले। मन में अनेक उदगार उठ रहे होंगे कि मन्दिर में खूब ज़ोर शोर से कीर्तन हो रहा होगा - समाप्ति पूजन तक किसी तरह हम भी जल्दी जल्दी पहुंच जायें और इन्हीं ख्यालों व विचारों में खोई हमारी पूज्य मां खतौली रेलवे स्टेशन से जो उतरने लगीं तो काल माया अपना खेल खेल गई और ट्रेन से उतरते समय दुर्घटना में उनका धाम गमन हो गया।

योग्य एवं आज्ञाकारी पुत्र व पुत्र वधू ने साहस से काम लिया। फाजिल्का अपने पिता श्री श्यामदास से फोन पर बात कर उन से आज्ञा ली कि माँ जिस पावन धरा पर पहुंचने के लिये व्याकुल थीं, क्यों न उनका अन्तिम संस्कार रतनपुरी की धरती पर किया जाये - क्या गुज़री होगी उस पति पर - पर धर्म की राह पर चलने वालों को चुनौतियों को स्वीकार करना ही पड़ता है सो भारी संख्या में सुन्दरसाथ ने फूल मालाओं से सजा कर उनके पार्थव शरीर को आश्रम-मन्दिर को प्रणाम करवाया और उनकी शवयात्रा में शामिल होकर मेहर सागर के पाठ के साथ उनका दाह संस्कार किया।

दूसरे दिन विशेष धार्मिक मंच पर सरकार श्री की आज्ञा से मंच मंत्री ने समस्त सुन्दरसाथ की ओर से शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना के भाव प्रकट किये और दो बार निजनाम श्री जी साहेब का सामूहिक जाप किया गया - उनके बेटे ने खड़े होकर हज़ारों सुन्दरसाथ को अपने परिवार की ओर से प्रणाम कर कृतज्ञता प्रकट की और इस प्रकार पूज्य माँ धनी चरणों में लीन हो गई। धाम-दर्शन परिवार आदरणीय श्री सुन्दरदास जी, उनके बेटों व बेटियों एवं समस्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है और धाम धनी से अपनी अंगना को निज चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है।

धाम-दर्शन

Nijanand App